परमार्थ के मार्ग में सांसारिक बाधाएँ

संत-महात्माओं और ईश्वर भक्तों के जीवन-चरित्र पढ़ने से यह मालूम होता है कि दुनियां के लोगों ने ईश्वर-भक्ति के रास्ते में बड़ी-बड़ी व्याधियां और मुसीबतें पैदा की है. ईसा और मंसूर को सूली पर चढ़ना पड़ा, मीरा को विष दिया गया, शम्स तबरेज़ की खाल उतारी गयी, गुरु तेग़बहादुर जी को जलते तेल से नहलाया गया, गुरु गोविन्द सिंह जी के बच्चों को जीते जी दीवार में चुनवाया गया. इस तरह की अनेकों मिसालें मिलती हैं. संत महात्माओं को दुनियां वालों ने हमेशा तंग किया, उन्हें तरह-तरह के दुःख दिए, जिससे वे सच्चे परमार्थ की कार्यवाही न कर सकें. घोर कलयुग आता जा रहा है. कौन जाने किस वक्त में क्या मुसीबत आएगी, इसका अंदाज़ नहीं हो सकता. लेकिन जो कुछ संतों और महापुरुषों ने कहा है उसे सोच कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं. अगर यह अत्याचार न हो तो प्रभु के प्यार की परीक्षा कैसे हो, और उस प्यार में परिपक्वता कैसे आये? इसलिए जो मालिक को सच्चे दिल से प्यार करता है वही उन मुसीबतों को सहन कर सकेगा और भक्ति और परमार्थ के रास्ते से डगमग नहीं होगा.

यह दुनियाँ काल यानी शैतान और माया का पसारा है. काल ने सबको फ़ांस रखा है. परमार्थ-पथ पर चलना इस फंदे से अपने आपको निकालना है. लेकिन काल अपनी दुनियां से किसी को निकलने नहीं देता. जैसे-जैसे अभ्यासी परमार्थ-पथ पर अग्रसर होता जाता है, काल उसके लिए अधिकाधिक बाधाएँ पैदा करता है और जो पहुंचे हुए हैं, जैसे संत-महात्मा और साधुजन, उनके लिए मुसीबतों का रूप और भी भयंकर होता जाता है. सबसे पहले मुसीबत घर वालों की तरफ से पैदा की जाती हैं. भक्तों के पीछे जात-बिरादरी और छुआछूत की बाधा घर वालों की तरफ से लगती है. घर वाले रोकते हैं कि किसी तरह परमार्थी कार्यवाही न होने पावे, सत्संग में न जाने पावें. वे बदनाम करते हैं और हंसी उड़ाते हैं. यह सब भगवान की मौज़ और भविष्य में किसी अच्छाई के लिए होता है.

एक कहानी है. किसी घर में घडी नहीं थी. उस घर का एक आदमी घडी खरीद लाया और उसे दीवार पर लटका दिया. वह घडी हर समय टिक-टिक करती रहती थी. उस घर में एक अंधी बुढ़िया रहती थी. उसने न कभी घडी देखी थी और न वह उसकी क़दर जानती थी, घडी की टिक-टिक उसे हमेशा परेशान करती थी और वह बुढ़िया चाहती थी कि उस घडी को फेंक दे. लेकिन उसका बस नहीं चलता था. एक दिन उस घर में चोरी हो गयी. उस बुढ़िया ने कहा कि चोरी इस घडी की वज़ह से हुई है. इसके बाद एक-एक करके कई बच्चे बीमार पड़े. बुढ़िया ने कहा कि जबसे टिक-टिक वाली यह घड़ी इस घर में आयी है, हमारे घर पर मुसीबत छा गयी है.

इसे घर से बाहर फेंक दो. पर उसकी बात किसी ने नहीं सुनी. एक दिन उस घर में कोई बच्चा मर गया. बस फिर क्या था? बुढ़िया का गुस्सा हद से गुज़र गया. वह अपने आपको न रोक सकी. उसने टटोलते -टटोलते उस घडी को पा लिया और पहले तो उसे खूब कुचला और फिर उसे बाहर फेंक दिया.

जब किसी के घर में संत पधारते हैं या कोई दुनियादार उनकी सेवा में जाता है, अथवा किसी सत्संग में शामिल होता है, या उपदेश ले लेता है तो उसके घर वाले उसके पीछे लग जाते हैं और घर की हर मुसीबत और बला की ज़िम्मेदारी सत्संग या संत-महात्मा के मत्थे मढ़ देते हैं. कहते हैं कि जबसे इन महात्मा जी का आगमन हुआ है, इनका सत्संग किया है, मुसीबत ही मुसीबत आ रही हैं. कहने का मतलब यह है कि दुनियाँ ने संतों और उनके भक्तों और सेवकों को कभी चैन से नहीं रहने दिया है और न रहने देगी बल्कि हर रोज़ नई से नई व्याधि पैदा करेगी. सच्चे जिज्ञासु इसको अपने प्रीतम की मौज़ और उनका उपहार समझते हैं. इससे उस जिज्ञासु का कोई नुक़सान नहीं होता बल्कि जितना ज़्यादा दुनियाँ उनको तंग करती है उतनी ज़्यादा उसकी भक्ति बढ़ती जाती है और दुनिया से वैराग पैदा होता जाता है

यहां पर सच्चे और झूठे की परख होती है. जो मालिक के सच्चे भक्त हुए हैं उन्होंने दुनियाँ की तरफ से निरादर, अपमान और दुर्व्यवहार आदि सभी बातें सही हैं और सब कुछ सहन किया है. दुनियाँ के सामने उन्होंने एक आदर्श पेश किया है कि चाहे दुनियाँ वाले बदनामी करें या नेकनामी, चाहे कोई बुरा कहे या दुतकारे, हमें इसकी परवाह नहीं है. जिन्होंने भक्ति का रास्ता पकड़ा उन्होंने अपनी दुनियाँ उजाड़ कर रख दी. संसार और परमार्थ, लोक और परलोक, दोनों एक साथ नहीं मिल सकते. एक को दूसरे पर क़ुर्बान करना पड़ेगा. अगर परलोक चाहते हो तो दुनियाँ छोड़नी पड़ेगी. मगर दिखाबे के लिए तोड़-फोड़ नहीं करनी होती है. कभी ऐसे अवसर भी आवेंगे जब मालूम हो जावेगा कि भक्ति कहाँ तक पहुंची है. जिसमें भक्ति सच्ची और पक्की होगी वही प्रभु के दरबार में पहुंचेगा. ढोंगी और कपटी के लिए मालिक के दरबार में कोई जगह नहीं है.

कभी-कभी भक्ति और प्रेम का एक ज्वारभाटा सा आता है और उसमें साधक अपने को यह समझने लगता है कि मैंने सब कुछ पा लिया. मगर अक्सर ऐसी बाढ़ स्थिर नहीं रहती. एक भक्त ने ईश्वर प्रेम के आवेश में अपने पैरों में पत्थर मारने शुरू कर दिए. उसने कहा कि अगर मुझे ईश्वर नहीं मिलता तो मैं अपने पैरों को मार-मार कर कुचल डालूंगा. मगर उसकी यह भक्ति कच्ची थी. पैर भी कुचल गए और ईश्वर भी नहीं मिला. यह

ढोंग है. अगर थोड़े देर के लिए आँखों से आंसू बहने लगें, कुछ क्षणों के लिए बुद्धि तर्क-वितर्क करना छोड़ दे और मन शांत हो जाए तो क्या यह असली ईश्वर-प्रेम है? क्या इसमें स्थिरता आ गयी? सत्संग में आकर गुरु के चरणों में बैठने से, सत्संग के वातावरण से थोड़ी देर के लिए हरेक साधक पर ऐसी अस्थिर हालत गुज़रती है. मगर जहां घर पहुंचे और बच्चों ने लिपट कर मीठी-मीठी बातें कीं, या स्त्री ने कुछ कह सुन दिया, सारी भक्ति धुंआ हो जाती है. फिर लौट कर वहीँ आ जाते हैं जहां थे.

भक्ति का वेग आने से ही गुबार दूर नहीं होता. किसी तालाब में काई जमी है. हाथ से काई को हटा दो तो साफ़ पानी दिखेगा. लेकिन फिर आसपास से आकर काई उसको ढंक लेगी. इस तरह का वेग आना मन का ऊंचा भाव है. यह लक्षण तो अच्छा है पर स्थाई नहीं है. इस तरह के क्षणिक भाव से क्या ईश्वर मिल जायेगा? नहीं. इस भाव को कोशिश करके स्थाई बनाओ. हर समय वही हालत रहे. दुनियाँ की हर चीज़ में ईश्वर का रूप देखो. अपने हरेक काम को उस ईश्वर की सेवा समझ कर करो.

दुनियाँ में जब तक रहना है, यहां के कर्म तो करने ही पड़ेंगे. एक ही कर्म फँसाता है, वही कर्म निकालता भी है. यदि उस कर्म को करने में अपने को शामिल कर लोगो तो वह कर्म फँसायेगा और अगर उस कर्म को ईश्वर की सेवा समझ कर करोगे तो वही कर्म बंधन से छुड़ाएगा. मालिक की याद बराबर बनी रहेगी और प्रेम व भक्ति पक्की होती जाएगी. मन से सोचो और बुद्धि से विचार करो कि यह लड़का जिसे तुम अपना कहते हो वह किसका है? क्या वह तुम्हारे साथ आया था या तुम्हारे साथ जायेगा? यह मकान किसका है? क्या इसे तुम अपने साथ ले जाओगे?

इसी तरह दुनियाँ की हर चीज़ के बारे में सोचो तो देखोगे कि कोई तुम्हारा नहीं है. न तुम्हारे साथ आया था और न तुम्हारे साथ जायेगा. यहां की कोई चीज़ तुम्हारे काम नहीं आएगी. ये सब फंसाने वाली हैं. न मालूम तुम्हारी कितनी शादियां पिछले जन्मों में हुईं? कितने बेटे-बेटियां हुईं, कितने मकान बने, मगर अभी तृप्ति नहीं हुई? यह सब तो होता रहा है, आगे भी होता रहेगा. मनुष्य जन्म की क़ीमत समझो. इसी मनुष्य योनि में ही ईश्वर की प्राप्ति हो सकती है, दूसरी योनि में नहीं. इसलिए इस जन्म को अमूल्य जानकर इसका उपयोग ईश्वर प्राप्ति के लिए करो.

यह ज़िंदगी झूंठी ज़िंदगी है. आत्मा मलीन मन के पर्दों में दबी हुई है. जब वे परदे हट जाते हैं और आत्मा निखर जाती है, तभी असली ज़िंदगी शुरू होती है. जब किसी पर ईश्वर की कृपा होती है और ईश्वर उसे

अपनाना चाहता है तो उसके बंधन टूटने लगते हैं. सबसे पहले उसकी प्यारी से प्यारी चीज़ उससे छीनी जाती है. दुनियांदार इसे देखकर रोते हैं, संत खुश होते हैं कि हे प्रभु ! तू कितना अच्छा है. इसे लेकर तूने मेरा बंधन काट दिया. इस तरह हर कदम पर इम्तिहान होता है. वगैर इम्तिहान के कोई उसे प्राप्त नहीं कर सकता. क़ुरबानी करनी पड़ेगी. अगर उस ईश्वर को पाना चाहते हो तो दुनियाँ की चीज़ें तो क्या अपनी गर्दन तक काट कर देनी पड़ेगी.

जब तक तन नाहीं जरत, मन नाहीं मर जात !

तब लगि मूरत श्याम की, सपनेहुँ नाहिं लखात !!

यह दुनियां धोखा दे रही है. दिखाई कुछ दे रहा है, असलियत कुछ और है. जो असल है वह सिर्फ ईश्वर है, उसे पाने की कोशिश करो.

जब हमें किसी चीज़ से सुख मिलता है तब हम ईश्वर को बड़ा धन्यवाद देते हैं, और जब किसी चीज़ से दुःख मिलता है या मुसीबत आती है तो ईश्वर से दूर भाग खड़े होते हैं या उसे मज़बूरी में बर्दाश्त करते हैं, हम ईश्वर को धन्यवाद नहीं देते और न उसमें खुश होते हैं. यही कहते हैं कि ईश्वर को ऐसा ही मंज़ूर था. लेकिन यह मालिक की मर्ज़ी के साथ सहयोग करना नहीं है. हमारी आत्मा अभी निखरी नहीं है.

असल निखार तब होगा जब लड़का मरने पर भी वही ख़ुशी हो जो लड़का पैदा होने के वक्त लोग मनाते है . पूज्य महात्मा रामचंद्र जी महाराज कैंसर से पीड़ित थे. उन्हें बहुत तकलीफ थी लेकिन वे सदा प्रसन्न दिखाई पड़ते थे. किसी भक्त ने उनसे निवेदन किया कि आप इसे अच्छा करने के लिए ईश्वर से दुआ क्यों नहीं करते ? ईश्वर अपने प्यारे भक्तों को इतनी तक़लीफ़ क्यों देता है? उन्होंने कहा -"अगर तुम्हारा माशूक़ तुम्हारे मुंह पर प्यार से एक थप्पड़ लगा दे तो उसे तुम तक़लीफ़ समझोगे या उसकी एक अदा? तुम उससे खुश होंगे या नाराज़? इसी तरह तक़लीफ़ भी माशूक़ की एक अदा है. ईश्वर हमारा प्रियतम है और प्यार से उसने अगर हमें कोई मुसीबत भेज दी तो वह उसकी अदा है. हमें इसमें बड़ा आनंद आता है." मतलब यह है कि जब तक पूर्ण समर्पण नहीं हो जाता, ऐसी अवस्था नहीं आती. पर ऐसा करना निहायत मुश्किल है.

दुःख बर्दाश्त करने के चार रूप हैं :

(१) मज़बूरी से दुःख बर्दाशत करना . यह 'राज़ी-ब-रज़ा ' (यथा लाभ संतोष) नहीं है .

(२) दुःख को प्रभु की कृपा समझकर बर्दाशत करना.

(३) दुःख आवे तो उसे सराहे और सोचे कि हे प्रभु ! तेरी बड़ा कृपा है. न मालूम कितनी बड़ी मुसीबत थी जो तूने इतने थोड़े में ही काट दी. न मालूम सूली पर ही चढ़ना पड़ता जो सिर्फ कांटा ही चुभ कर रह गया.

(४) दुःख आवे तो यह सोचे कि वह मेरे मालिक की तरफ से एक तोहफा है, और उसमें खुश रहें. शेर शरीर की बोटी-बोटी नोच कर चबा रहा है और फिर भी आवाज़ निकल रही है ' शिवोहम, शिवोहम '. जो खा रहा है वह भी ईश्वर है और जिसे खा रहा है वह भी ईश्वर है. जलते हुए तवा पर बैठे हैं, सिर पर उबलता हुआ तेल डाला जा रहा है, दूर-दूर तक धुंआ और दुर्गन्ध उड़ रही है, फिर भी मुँह से निकल रहा है - ' वाहे गुरु, वाहे गुरु ' . यह है असली और पूर्ण समर्पण और सच्ची ' राज़ी-ब-रज़ा ' .

कोई चीज़ मुफ्त नहीं मिलती. क़ीमत देनी पड़ती है. जो चीज़ जितनी महंगी है उतनी ही ज़्यादा उसकी क़ीमत देनी होगी. अगर ईश्वर को चाहते हो तो जान की बाज़ी लगानी पड़ेगी. क़ीमत क्या है ? अपने अरमानों (इच्छाओं) का खून कर दो, इच्छा रहित हो जाओ और अपने आपको पूरी तरह समर्पण कर दो. इसका भेद संतों के सत्संग में मिलेगा.

जहां आपस में मौहबत्त से रह रहे हो वहीं सतयुग है. जहां एक दूसरे से कतराते हो,भेद-भाव है, वहीं कलियुग है. दैवी जीवन वहां है जहां सबके साथ प्रेम है, सहयोग है. परमात्मा जिस हाल में भी रखे उसी में शुकराना अदा करते रहो,और खुश रहो.

राम सन्देश : मई , १९९३.